गुरु नानक - सबद ९९
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥
रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७५

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥
जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ भेतु ॥
भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥
झूठा रुदनु होआ दुोआलै खिन महि भइआ पराइआ ॥
साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥४॥१॥

सार: जब इच्छाएँ और आदतें हमारे चरित्र को आकार देने लगती हैं तब वह चुपचाप हमारे जीवन की दिशा तय करने लगती हैं। यह धीरे-धीरे हमारी पहचान में ढल जाता है। परिणामस्वरूप, हम पाते हैं कि हमारी पसंद सचेत जागरूकता के बजाय गहरी आदतों से अधिक संचालित होने लगती है। देखने में तुच्छ लगने वाले काम जमा होते हैं और स्थायी प्रवृत्तियों में बदल जाते हैं जो बिना किसी विवेक के हमारे भविष्य के निर्णयों को नियंत्रित करने लगते हैं। समय के साथ, हमारे विकल्प सिमटते जाते हैं क्योंकि यह स्वरूप गहरे होते जाते हैं। जीवन उस समझ से अधिक प्रभावित होने लगता है जिसे हमने अभ्यास में उतारा है, न कि उस बोध से जिसे हम वास्तव में समझते हैं। फिर भी, जागरूकता में इस प्रवाह को तोड़ने की शक्ति है। इन स्वरूप को पहचानकर, हम पुनः सचेत रूप से अपने भविष्य को आकार देने की अपनी क्षमता को वापस प्राप्त कर सकते हैं।

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥
रात के चौथे पहर में, हे व्यापारी मित्र, किसान खेत जोतने आता है। 'व्यापारी मित्र' हमारी नीयतों का प्रतीक है और रात का चौथा पहर उस पल को दर्शाता है जब हमारी इच्छाएँ और आदतें हमारे चरित्र को परिभाषित करना शुरू करती हैं, हमारे भविष्य को आकार देती हैं।

जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ भेतु ॥
जब विनाशकारी गुण पकड़ बना लेते हैं और वही आगे ले कर चलते हैं, हे व्यापारी मित्र, तब किसी को भी सच्चा बोध प्राप्त नहीं हो सकता।

भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥
जब नकारात्मक और विध्वंसक प्रवृत्तियाँ हावी हो जाती हैं तब सर्वव्यापी चेतना का बोध प्राप्त नहीं हो सकता।

झूठा रुदनु होआ दोुआलै खिन महि भइआ पराइआ ॥
झूठा रोना चारों ओर गूँजता है और एक पल में, यह पराया हो जाता है। यह विरोधाभास हमारे सांसारिक लगाव के सतहीपन और नाज़ुक प्रकृति को प्रकट करता है जो तब गायब हो जाते हैं जब हम उनसे पहचान बनाना बंद कर देते हैं।

साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥
वही वस्तु प्राप्त होती है जिससे हमने प्रेम किया है। यह प्रतीक है कि मनुष्य वही बनता है जो वह चाहता है, अस्थायी पर ध्यान केंद्रित करने से दुःख होता है और शाश्वत पर ध्यान केंद्रित करने से शांति मिलती है।

कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥४॥१॥
गुरु नानक कहते हैं, हे मानव, रात के चौथे पहर में, वही फसल काटी जाती है जो खेत में बोई गई थी। 'चौथा पहर' उस अंतिम क्षण को दर्शाता है जब हम उन विशेषताओं के परिणाम काटते हैं जिन्हें हमने अपनाया होता है। (४)(१)

तत्त्व: गुरु नानक एक गहरा सच बताते हैं, हमारी उपलब्धि के अंतिम क्षण शोर में नहीं बल्कि शांत स्थिरता में आते हैं जब हम ईमानदारी से अपने सच्चे स्वरूप पर विचार करते हैं। वह दिखाते हैं कि हमने कैसे जीवन जिया है, हमारी आदतों और इच्छाओं से आकार लिया है जो हमारी यात्रा पर एक स्थायी छाप छोड़ते हैं। जीवन हमें हमारे कार्यों के परिणामों का सामना एक प्राकृतिक विकास के रूप में कराता है न कि न्याय के रूप में। जिन अभ्यासों को हम पोषित करते हैं वह

स्पष्ट हो जाते हैं यह दर्शाते हुए कि हमारे परिणाम सीधे उन रास्तों को दर्शाते हैं जिन्हें हम चुनते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com